# कच्छ की आहीर ज्ञाति : पर्यटन के संदर्भमें

प्रा.डॉ.राजेश एम. जादव, कविश्री बोटादकर आर्टस् एवं कोमर्स कॉलेज, बोटाद

भारत भूमि विविधता एवम् विभिन्नता की जननी है । जैसी विविधता एवम् विभिन्नता भारत के प्रत्येक प्रदेश और हर क्षेत्र में पाई जाती है । उपर्युक्त 'गुजरात' और 'गुजरात' के 'कच्छ' जिले में संस्कारिता के सभर विभिन्नता वैसी ही जाती है । कच्छ की संस्कृति को गौरववंती बनाने में यहाँ के लोक समुदायों का विशेष प्रदान रहा है । उन समुदायों में एक 'आहीर' जाति भी एक है । 'आहीर' जाति की संस्कृति ( Culture) वर्षो से यहाँ अछूती रही है । वह जाति अपनी सांस्कृतिकता गरीमा की धरोहर को आज भी आधुनिकता के आक्रमण के सामने विद्यमान है ।

**भौगोलिक स्थान :**

भारत के पश्चिम दिशा में स्थित 'कच्छ', 'गुजरात' राज्य के इतिहास में सदाय अहम् स्थान रहा है । वह जिला $22^0.44'$ एवम् $24^0.42'$ उत्तर अक्षांश और $68^0.10'$ एवम् $70^0.50'$ पूर्व रेखांश के बीच में स्थित है । 'कच्छ' के उत्तर में पाकिस्तान, पश्चिम में अरबी समुद्र है । दखन में 'कच्छ की खाडी' वह कच्छ को काठियावाड से अलग करती है । 'कच्छ' के उत्तर एवम् पूर्व भाग में कच्छ का रण (अनुक्रमें बडा और छोटा) स्थित है । 'कच्छ' जिला मेदानी विस्तार की दृष्टि से गुजरात राज्य के और भारत के लिए जिला के बाद का द्वितीय क्रम का जिला है । जिल में गांधीधाम, लखपत, अबडासा, नखत्राना, मांडवी, मुद्रा, भुज, अंजार, भचाऊँ, रापर आदी दश (10) तहसिल बने है । जिले का वहीवटी मथक भुज है । 'कच्छ' जिले में 8 शहर और 950 गाँव में लोग ज्यादा बसते है । जिले का कुल क्षेत्रफल 45,652 वर्ग कि.मी. है । उनमें 45376.44 वर्ग किमी विस्तार ग्रामीण एवम् शेष 275.56 वर्ग कि.मी. नगरीय है । वर्ष 2001 जनगणना के अनुसार कुल जन संख्या 15,83,225 पाईं है । 1991 की जनसंख्या से 25.4% वृद्धि पाई गईं है । यहाँ मुख्यत्वे कच्छी एवम् गुजराती भाषा बोली जाती है ।[1]

**विभिन्न जातियों 'कच्छ' में :**

'कच्छ' बरसों से अछूता मूलक रहा है । यहाँ पर विभिन्न मूलकों में से विभिन्न प्रजातियों आके बसवाट किया है । यहाँ प्रजातियाँ कोली, रबारी, मियाना, हरिजन एवं आहीर आदि प्रजातियाँ मुख्य थी । लेकिन सब से ज्यादा 'मियाना पट्टी' में पाई जाती है और वह आज भी वही बसवाट करती है ।

**'आहिर' जाति भारत में :**

भारत में लगभग 4 करोड 'आहीर' जाति की बसती है । [2] यह प्रजातियाँ गुजरात में नहीं लेकिन राजस्थान, महाराष्ट्र, पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार और नेपाल आदि क्षेत्र में पाई जाती है ।[3] आहीर जाति धनगर / गवणीनी पेटा ज्ञाति मानी जाती है । भारत में तराई में सब से ज्यादा बसती मौजूद है ।[4] गुजरात में आहिर